मत्स्य निदेशालय

मत्स्य भवन, डोरण्डा, राँची- 834002 (झारखण्ड)
टेलीफैक्स : 0651-2480747, 2480437
Website : www.jharkhandfisheries.org
Email : directorfisheriesjhar@rediffmail.com
fisheriesjharkhand@gmail.com

पानी है अनमोल खजाना, मछली पालन भूल न जाना। मछली पालन को अपनाएँ, स्वरोजगार के अवसर पाएँ।

जनवरी-फरवरी

- तालाब के पानी के पी०एच० नियमित जाँच अवश्य की जाय। उपयुक्त समय 8–10 बजे दिन।
- तालाब के जलीय घासों की नियमित सफाई।
- सदाबहार तालाब में चूना का प्रयोग औसतन 50 किंग्रा०/एकड अवश्य करें।
- मछली को और ज्यादा बढ़ने के लिए पूरक आहार का नियमित प्रयोग।
- मत्स्य अंगुलिकाओं का स्थानांतरण सदाबहार तालाब में किया जाय।
- मत्स्य बीज उत्पादकों का विशेष प्रशिक्षण प्रारंभ।
- कामन कार्प का प्रजनन
- पंचायत स्तर पर आयोजित गोष्ठी/कैम्प मे अवश्य भाग लें।

मार्च-अप्रैल

- मत्स्य बीज उत्पादक तालाब की तैयारी प्रारंभ करें।
- जिन्होंने फरवरी में चूना नही डाला वे इस माह में चूना अवश्य डालें।
- मछली को नियमित खाना दें।
- नदियों/जलाशयों के छाड़न की पहचान एवं मत्स्य स्पॉन का संचयन/संर्वधन कराया जाय।
- आर.एफ.एफ. के अंतर्गत नदियों एवं जलाशयों के छाड़न/मत्स्य पालन के क्षेत्र की घेराबंदी एवं मरम्मति कार्य।
- मत्स्य बीज उत्पादकों का विशेष प्रशिक्षण जारी। भाग लें।
- पंचायत स्तर पर आयोजित गोष्ठी/कैम्प में अवश्य भाग लें।

मई-जून

- नदी एवं जलाशयों के छाड़न में मत्स्य स्पॉन का संचयन कार्य।
- सभी प्रकार के तालाब, आहर, पोखर, डोभा के बाँध मरम्मती एवं घासों की सफाई।
- वर्षा के पहले पानी के समय 100 किंग्रा० प्रति एकड़ की दर से चूना का प्रयोग।
- वर्षा का ज्यादा से ज्यादा पानी रोकने के लिए तालाब के बाँध की मरम्मति अवश्य पूरी कर ली जाय।
- मछली के बीज की उत्तरजीविता अर्थात् मछली के बीज के ज्यादा संख्या में बचे रहने के लिए संचयन के पूर्व मांसाहारी एवं अपतृण मछलियों का उन्मूलन आवश्यक है। इसके लिए प्रति एकड़ 1000 किंग्रा० की दर से महुआ खल्ली या 120–125 किंग्रा० ब्लीचिंग पाउडर का प्रयोग करें।
- स्थानीय मत्स्य बीज उत्पादक से संपर्क कर तालाब तैयारी एवं मत्स्य बीज उपलब्धता की जानकारी अवश्य प्राप्त करें।
- सभी प्रकार के छोटे बड़े तालाब में यथा संभव लीज अथवा साझा में लेकर मछली पालन अवश्य करें।
- हैचरी संचालन एवं स्पॉन उत्पादन।

जुलाई-अगस्त

- कतला, रोहू, मृगल, ग्रास कार्प, सिल्वर कार्प, कॉमन, कार्प, के बीज का संचयन।
- प्रति एकड 9000 मत्स्य फ्राई का संचयन।
- मछली की उत्तरजीविता अधिक पाने के लिए बडे आकार के मछली का बीज डालें।
- मछली की उत्तरजीविता एवं अभिवृद्धि के लिए पूरक आहार जैसे सरसों खल्ली, चावल कोढ़ा, फ्लॉटिंग फीड का सही मात्रा में प्रयोग। (यथा प्रारंभ में 5–10 किंग्रा० एकड़ प्रति दिन)
- सभी प्रकार के छोटे–बड़े तालाब, डोभा आदि जलकर में मछली बीज का संचयन अवश्य करें।
- गोबर तथा रसायनिक खाद (80:20) की मात्रा में अवश्य प्रयोग करें।
- तालाब के मेढ़ पर छोटे फलदार वृक्ष/मुनगा आदि लगायें और सब्जी की खेती की जाय।
- मनरेगा कूपों में मत्स्य बीज का संचयन।
- हैचरी संचालन एवं स्पॉन उत्पादन।
- पंचायत स्तर पर गोष्ठी/कैम्प में अवश्य भाग लिया जाय।

सितम्बर-अक्टूबर

- मछली की उत्तरजीविता एवं अधिक उत्पादन के लिए पूरक आहार का प्रयोग 10–15 किंग्रा० प्रति एकड़ प्रति दिन की दर से की जाय।
- पी०एच० का जाँच नियमित रुप से समय–समय पर की जाय।
- तालाबों की घासों की सफाई नियमित रूप से की जाय।
- मछली की वृद्धि की हर 15 दिनों में जाँच करें।
- मासिक किस्त में जैविक एवं रसायनिक खाद का प्रयोग।
- पंचायत स्तर पर आयोजित गोष्ठी/कैम्प में अवश्य भाग लें।
- पंचायत के सभी मत्स्य कृषक एक दूसरे से संपर्क के विचारों का आदान–प्रदान एवं बैठक करें।

नवम्बर-दिसम्बर

- बीमारी से बचाव– जाड़ा प्रारंभ होते ही 40–50 किंग्रा० प्रति एकड की दर से चूना का प्रयोग अवश्य किया जाय।
- पूरक आहार का प्रयोग मछली के भोजन लेने की आवश्यकता के अनुसार की जाय।
- पी०एच० का जाँच नियमित रूप से समय–समय पर की जाय।
- मासिक किस्त में जैविक एवं रसायनिक खाद का प्रयोग।

नोटः– पंचायत स्तर पर आयोजित गोष्ठी/कैम्प में अवश्य भाग लें।

annapurnaprinters.rnc@gmail.com, 98357 78101

- **प्रशिक्षण कब, क्यों, कैसे** :- मत्स्य किसान प्रशिक्षण केन्द्र, शालीमार एवं डोरण्डा राँची में राज्य स्तर पर पाँच दिवसीय एवं दो दिवसीय प्रशिक्षण सालों भर दिया जाता है। प्रशिक्षण से सोच बदलती है और वैज्ञानिक ढंग से मत्स्य पालन करने की जानकारी मिलती है।

  इच्छुक मत्स्य कृषक ग्राम सभा/पंचायत मुखिया के माध्यम से संबंधित जिला मत्स्य पदाधिकारी को आवेदन दें। प्रशिक्षण में भाग लेने पर आने–जाने का भाड़ा एवं मानदेय दिये जाने का प्रावधान है। मत्स्य बीज उत्पादकों का विशेष प्रशिक्षण की सुविधा– कोई भी मानेदय एवं आने–जाने का प्रावधान इसमें नहीं है। अपितु 200/ रु० प्रति प्रशिक्षणार्थी के द्वारा निबंधन/भोजन पर व्यय हेतु देय है।
- **कौन सी पालने योग्य मछलियाँ** :- कतला, रोहू, मृगल, कालबासू, सिल्वर कार्प, ग्रास कार्प एवं कॉमन कार्प। वायुश्वांसी मछली यथा कवई, पंगेशियस, मांगूर आदि।
- **जलीय खरपतवार/घास की सफाई क्यों** :- तालाब के जलीय घासों की नियमित सफाई (जैसे धान के खेत के खर–पतवार की सफाई के अनुरुप) अवश्य करें ताकि मछलियों के प्राकृतिक भोजन प्लवक को नाइट्रोजन, फासफोरस, पोटाशियम आदि पोषक तत्व ज्यादा उपलब्ध हो सके और प्लवक की मात्रा बढ़ सके।
- **चूना का प्रयोग क्यों** :- चूकि झारखण्ड प्रदेश की मिट्टी आम्लीय है अतः तालाबों में चूना का प्रयोग नितांत आवश्यक है। पानी का पी.एच. मध्यम क्षारीय होना तालाब के लिए उपयुक्त है, अतः चूना का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में किया जाय। औसतन प्रति एकड़ 200 किंग्रा० चूना का प्रयोग। 100 किंग्रा० तालाब में पानी जमा होते ही प्रयोग किया जाय इसके बाद 50 किंग्रा० प्रति एकड़ जाड़ा प्रारम्भ होने के पूर्व किया जाय। सदाबहार तालाब होने पर गर्मी प्रारम्भ होने के पूर्व मार्च में 50 किंग्रा० प्रति एकड़ प्रयोग करें।
- **जैविक/रासायनिक खाद का प्रयोग क्यों** :- तालाब में मछली का प्राकृतिक आहार अर्थात् प्लवक है, इसके अधिक उत्पादन हेतु जैविक खाद/रासायनिक खाद के प्रयोग कराना जरूरी है। मछली खूब बढ़ेगी। तालाब की उत्पादकता बढ़ाने के लिए जैविक खाद (गोबर, मुर्गी का बीट, कम्पोस्ट आदि) का प्रयोग 500 से 1000 कि.ग्रा/एकड़ मासिक किस्त में अवश्य किया जाय। रासायनिक खाद के रूप में प्रति एकड़ 5–10 किंग्रा० यूरिया, 5–10 किंग्रा० सिंगल सुपर फॉस्फेट आदि का प्रयोग मासिक किस्त में किया जाए। इसलिए मत्स्य कृषकों को तालाब में जैविक तथा रसायनिक खाद के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया जाय। जैविक खाद में सभी पोषक तत्व होते है, इसलिए बेहतर खाद माना जाता है।
- **पूरक आहार का प्रयोग क्यों** :- मछली के बढ़ने एवं अधिक उत्पादन के लिए प्राकृतिक आहार के अतिरिक्त पूरक आहार देना नितांत आवश्यक है। पूरक आहार जैसे सरसों का खल्ली, चावल का कोढ़ा या अन्य सस्ता अनाज तथा फ्लॉटिंग फीड का इस्तेमाल ज्यादा से ज्यादा कराया जाय एवं **फीड बेस्ड फिशरीज स्वयं भी करें एवं इसका व्यापक प्रचार-प्रसार करें। मछली खूब बढ़ेगी।**
- **पानी की जाँच क्यों** :- मत्स्य पालन में तालाब के मिट्टी के पानी के भौतिक एवं रसायनिक गुणवत्ता बनाये रखने के लिए मिट्टी पानी की जाँच की जाय, ताकि मछली का प्राकृतिक भोजन अर्थात् तालाब की उत्पादकता बढ़ाई जा सके एवं मछली स्वस्थ रहे।
- **सहायता संपर्क** :- मत्स्य किसान प्रशिक्षण केन्द्र, शालीमार, राँची (फोन नं. 0651-2440263, 9470521187), मत्स्य अनुसंधान केन्द्र, राँची (फोन नं. - 0651-2440885) 7762812020
  मत्स्य निदेशालय, डोरण्डा, राँची, फोन नं. 0651-2480437

मछली पालें धनवान बनें।   **मछली खायें बलवान बनें।**

391- matsya palan ki gatividhiya 3000 sheet one side - Sig No. - Side: - Simplex - 12-Jan-24 CM K